# धूप में नहाई देहगन्ध

डॉ० इन्दु जोशी

**धूप में नहाई देहगन्ध** एक ऐसी बिम्ब-योजना है, जो प्रकृति में व्याप्त एक प्रेमल सिम्फनी को तो व्यक्त करती ही है, एक लोक-संसक्त राग को भी प्रतिध्वनित करती है। यद्यपि **डॉ. इन्दु जोशी** के इस दूसरे संग्रह की कविताओं की मूल चेतना प्रेम और करुणा है किन्तु कुछ रचनाओं में नारी-जीवन की संघर्ष-कथा भी है। एक कवि के विविधवर्णी रूप का आस्वाद लेने के लिए इस संग्रह को पाठक बहुत दिनों तक सहेज कर रखेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

# धूप में नहाई

## देहगन्ध

डॉ. इन्दु जोशी

प्रतिध्वनि 2002
कोलकाता - 700 007

© लवली चार्वी जोशी

धूप में नहाई देहगन्ध : डॉ. इन्दु जोशी

प्रतिध्वनि2002, 31, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007 द्वारा प्रकाशित ।
एस्केज़, 8, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007 द्वारा मुद्रित ।
प्रथम संस्करण : 2007
मूल्य : एक सौ रुपए । विदेशों में US $ 6
छात्र संस्करण (पेपर बैक) : पचास रुपए।

**DHOOP MEIN NAHAYEE DEHGANDH**
poems by **DR. INDU JOSHI**

दीदी **डॉ. शारदा शर्मा**
एवं जीजाजी **डॉ. परमेश्वरीदत्त शर्मा**
को ससम्मान

–इन्दु जोशी

## अनुक्रम


| | |
|---|---|
| धूप में नहाई देहगन्ध | 9 |
| चित्र बनते हैं तुम्हारे स्पर्श से | 10 |
| उत्सव | 11 |
| सपनों का एलबम | 12 |
| वाद्ययंत्र | 13 |
| अग्निपरीक्षा | 14 |
| कर सको तो | 15 |
| मैंने सोचा है | 16 |
| सन्तुलन | 17 |
| अनंग रंग | 18 |
| रहस्य द्वार | 19 |
| चुप्पी का अर्थ काठ होना भी नहीं है | 20 |
| उर्वरा धरती | 21 |
| हवा | 22 |
| सम्पुष्टि | 23 |
| सपनों की महक | 24 |
| फिर | 25 |
| दुविधा | 26 |
| नवारम्भ | 27 |
| कैम्पफ़ायर | 28 |
| तुम बार-बार आते हो | 29 |
| मौसम की पहचान | 30 |
| वक्त | 31 |
| वह | 32 |
| जबकि जानती हूँ | 33 |
| नया साल | 35 |

मादकता 36
गैप 37
चुपचाप 38
ट्राम 39
प्यास 40
परिभाषा 41
कथा 42
वसन्त 43
स्पर्द्धा 44
खूँटे 45
भूमिका 46
ओ मेरी नियति 47
दर्प 48
वक़्त कम है 49
द्वन्द्व 50
अभाव 51
सुख-दुःख 52
ज़िन्दगी 53
वे 54
पथराई आँखों का सच 55
अंजनासुंदरी 57
गांधारी 58
यह कैसी विडम्बना है मेरे प्रभु 60
कन्यादान 61
पिता :
जानने का सुख 64
पति के होने का अर्थ 65
उस कोने में 66
ताकि मैं जान सकूँ 68
नाटक चल रहा है एक 69
सूनी है 70
श्राद्ध 71
दुःख तो एक महासागर है 72

# धूप में नहाई देहगन्ध

## धूप में नहाई देहगन्ध

तुम्हारी साँसों की महक
गन्धमादन की संजीवनी बूटी की तरह है
जो मुझमें भर जाती है
नया कुछ करने का उत्साह।

आकाश तब
मुझे अपनी मुट्ठियों में बंद लगता है
जिसके खुलते ही
फूल अपने नए रंगों में खिलने लगते हैं
धूप में नहाई देहगन्ध
एक आभा को जन्म देने लगती है।

तुम्हारा साथ पाकर
तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारे बारे में सोचकर
मैं वर्णमय होने लगती हूँ।

मेरे प्रिय!
तुम मेरी साँसों में इस तरह रच-बस गए हो
कि कुछ भी कहना
मुझे ग़ैरज़रूरी लगता है। ●

## चित्र बनते हैं तुम्हारे स्पर्श से

क्लाइडोस्कोप की तरह चित्र बनाते हैं बादल
लेकिन मेरे भीतर उससे भी कहीं अधिक
चित्र बनते हैं तुम्हारे स्पर्श से
कोई कम्प्यूटर है
जो कस्तूरी-गंध की आभा के
रचता है हज़ार रंग।

मुझे लगता है कि मैं बिछी हुई हूँ धरती की तरह
लेकिन तुम
हवा भी हो
सूरज भी
बादल भी
जिसका साथ पाकर मैं हो उठती हूँ
हरी-भरी
भरी-पूरी
स्त्री बनती हो भले ही
किसी पुरुष की प्रेरणा
लेकिन कोई पुरुष
किसी स्त्री का पूरा का पूरा जीवन हो जाता है!

वह तब अपनी छाया में रमने लगती है
चक्कर काटने लगती है अपनी ही छाया के
और कभी-कभी डरने लगती है
अपनी ही छाया से।

वह पुरुष के संस्पर्श से
पुरुष से भी बड़ी हो जाती है। ●

## उत्सव

एक उत्सव की तरह होता है तुमसे मिलना
बिना कुछ कहे हुए बहुत कुछ कह जाना
तुम्हारी वाचालता से सिकुड़ना, सहम जाना
तुमसे मिलकर लौटते हुए उदास हो जाना

मेरे पास शब्द नहीं होते
होता है संवेग-संकुल-संसार
तुम्हारे पास होता है शब्दों का विपुल भण्डार
जिनमें खोजती रहती हूँ अपने लिए अनकहा प्यार

मेरे अपने!
एक बार सिर्फ़ एक बार
मेरे मौन को करो अंगीकार
तब समझ पाओगे
कि प्यार राहत से कहीं ज़्यादा दे जाता है दुःख।

मैं उसी उदासी भरे दुःख को
बदलती हूँ कभी-कभी उत्सव में। ●

## सपनों का एलबम

मैंने तुम्हारी हथेलियों पर
अपने हाथों को रखा
एक भूकम्प हिला गया मुझे आपादमस्तक।

वर्जनाओं की अर्गलाएँ मुझे ढहती नज़र आईं
मर्यादाओं की श्रृंखलाएँ कड़कड़ा उठीं।

नहीं प्रिय, मैं नहीं हूँ प्रस्तुत
एक बियाबान को अपना घर बनाने को
नहीं प्रिय, मैं नहीं हूँ तैयार
एक डोंगी में सवार होकर सागर पार करने को।

मेरे अपने!
मैंने अपने सपनों को बंद कर रखा एक एलबम में
उन्हें देखने का वक़्त भी नहीं है अब मेरे पास
मैं नहीं हूँ उन भाग्यशाली लोगों में
जो अपनी सोच को दौड़ा सकते हैं कल्पना के घोड़ों पर

मेरी रूटीन लाइफ़ तो
कट जाती है रोटी की लड़ाई में।

मेरी बातों से उदास मत हो जाना
कुछ लोग असीम की बात कर सकते हैं
पर मेरे जैसे सीमाबद्ध लोग
अपनी-अपनी सीमा में गुज़र भी जाते हैं! ●

## वाद्ययंत्र

वाद्ययंत्रों की तरह होता है शरीर
उसे तुम बजा सकते हो अपनी तन्मयता से।

मेरे अधरों को लो अपने ओठों में
मैं कर दूँगी रसाप्लावित तुम्हारे संसार को
भरो अपनी साँसों में मेरी देहगन्ध को
मैं महका दूँगी तुम्हें कस्तूरी मृग की तरह

मेरे प्रिय!
मैं तुम्हें दूँगी अपना सर्वस्व
तुम मुझे मेरी स्वतन्त्रता देना। ●

## वाद्ययंत्र

वाद्ययंत्रों की तरह होता है शरीर
उसे तुम बजा सकते हो अपनी तन्मयता से।

मेरे अधरों को लो अपने ओठों में
मैं कर दूँगी रसाप्लावित तुम्हारे संसार को
भरो अपनी साँसों में मेरी देहगन्ध को
मैं महका दूँगी तुम्हें कस्तूरी मृग की तरह

मेरे प्रिय!
मैं तुम्हें दूँगी अपना सर्वस्व
तुम मुझे मेरी स्वतन्त्रता देना। ●

## अग्निपरीक्षा

मेरा बाहरी रूप मेरी केंचुल है
जिसे बदलती हूँ मैं क्षण-प्रति-क्षण
हूँ मैं धरती की तरह
तुम परिक्रमा कर रहे हो सूरज की तरह
तुमसे ताप पाकर
मैं तुम्हारी ऊर्जा को बदलती हूँ नए-नए मौसमों में।

तुम्हें सताती हूँ बार-बार
लेती हूँ मानो तुम्हारी अग्निपरीक्षा हर बार।

मेरे प्यार!
प्यार करने का अर्थ है
एक तीखी तलवार पर चलना। ●

## मैंने सोचा है

मैंने सोचा है
कि कह दूँगा तुमसे सच-सच
कि मेरा इन्तज़ार
सिर्फ़ तुम्हारे लिया था

उसके साथ बँधी नहीं थी कोई भोर
न कोई रूपहला चाँद
न कोई बादल
न कोई ठूँठ
न किसी चिड़िया की आवाज़
उसके साथ कुछ भी तो नहीं बँधा था।

कह दूँगी तुमसे
कि मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की
बिना किसी प्रतीक और उपमान के सहारे।

मैंने सोचा है
कि कह दूँगी तुमको सच-सच
कि मेरा दम्भ आड़े आता है
मेरी निष्प्रयोजन अभिव्यक्ति के बीच।

हाँ, मैंने सोचा है
कि कह दूँगी सच-सच
कि तुम्हारे बिना मैंने महसूस किया
खुद को सचमुच निरर्थक। ●

## सन्तुलन

तुमसे सम्बोधित हैं मेरे कुछ वाक्य
अगर वे तुम तक नहीं पहुँचते
तो मुझे लगता है
कि वे अर्थहीन थे।

तुमसे सम्बोधित होते हुए मैंने पाया है
कि मेरे भीतर का सच
पूर्णता की प्रक्रिया में होता है।

एक अनन्त यात्रा है मेरे और तुम्हारे दरम्यान
जिसमें शब्द बनते हैं सेतुबन्ध
उन्हीं से होती है
हम दोनों के भीतर
एक-दूसरे की अवस्थिति की पहचान।

जैसे एक शब्द संतुलन देता है पूरे वाक्य को
तुम मेरे बन्धु, मुझे सम्हाल जाते हो। ●

## अनंग रंग

अनंग रंग ने रँगा है मुझे
तुम्हारे रोम-रोम को रँगना चाहती हूँ मैं।

मेरी श्यामलता से आबद्ध है
तुम्हारी धवलता
श्वेत-श्याम चित्र को उकेरती।

मेरे रग-रग में दौड़ रही है
तुम्हारी तीव्रता
तीक्ष्णता में पछाड़ खाती-पछाड़ती।

अनंग रंग ने रँगा है मुझे
तुम्हारे रोम-रोम को
अपना रोम-रोम कर लेना चाहती हूँ मैं। ●

## रहस्य द्वार

मेरे द्वारा
अनुत्तरित तुम्हारे अनेक प्रश्नों से
मैं खुश हूँ
मेरे अन्वेषक!
मेरा अहम् ग्लेशियर की तरह बह गया है।

श्रम से नहाई तुम्हारी देहगन्ध को
मैं इत्र की तरह
अपने शरीर पर मल लेना चाहती हूँ
जिसदिन तुम अन्तिम प्रश्न का हल करोगे
तभी मिलेगी मुझे और तुम्हें सम्पूर्णता। ●

## चुप्पी का अर्थ काठ होना भी नहीं है

तुम्हारी धधकती आग को
मैं रख लेना चाहती हूँ अपनी हथेली पर
ताकि जब मैं चलूँ
अँधेरा उजाले में बदल जाए।

तुम कविता की तरह
निर्बन्ध और बाआवाज़ हो
किन्तु मेरी चुप्पी का अर्थ
काठ होना भी नहीं है।

मेरे प्यार!
मेरे भीतर जो रच-रम गया है
वह भोर की प्रार्थना की तरह है
जो रोज़ मुझे गढ़ता है।

आस्था तो स्वयं रचना है
उसके लिए ज़रूरत नहीं है
किसी प्रमाण की। ●

## उर्वरा धरती

मैं हूँ उर्वरा धरती की तरह
तुम प्रवेश करो मुझमें बीज रूप में
धारण कर मैं तुम्हें
वृक्ष रूप दूँगी।

तुम फैलना सघन छायादार वृक्ष के रूप में
ताकि राहत पा सके दुनिया तुम्हारी छाँव में। ●

## हवा

मैं तुम्हारे लिए हवा की तरह हूँ क्या
कि होऊँ मैं
तो लहलहा उठो पेड़-पौधों की तरह
और न होने पर
निस्पन्द हो जाओ मुरझाई पत्तियों की तरह
क्या तुम मुझे वैसे ही जीते हो
जैसे हवा बिना जीना नहीं होता आसान!

निर्बन्ध बहती अदृश्य सत्ता
कब बँधती है मुट्ठी में
साँस से ग्रहण की जाती है
बिना किसी बन्धन के
उसके होने को किया जाता है महसूस
अनायास ही। ●

## सम्पुष्टि

श्रेयस्कर है वर्तमान
यह मैंने कई बार जाना
लेकिन तुम्हारे होने ने
मुझे उसकी एक बार
फिर से सम्पुष्टि की। ●

## सपनों की महक

मुझ तक आने लगी है तुम्हारे सपनों की महक
मैं नींद से उठकर बैठ गई हूँ
उनकी मादक गन्ध से बेचैन होकर।

गन्ध मोहक है
पर जला रही है मुझे
गन्ध रोमांचक है
जगा रही है मुझे

सुबह होने को है
और तुम हो अपने सपनों में डूबे

तुम पुरुष देख सकते हो सपने
उनमें रह सकते हो ग़ाफ़िल
मैं हूँ स्त्री
मुझे नहीं है अधिकार सपनों में डूबने का।

मुझे अन्ततः जागना पड़ता है
संसार चलाने की ख़ातिर। ●

## फिर

फिर हमने अपने-अपने दिलों को थामा
और थमाने लगे एक दूसरे को.
एक ही कटोरी में चम्मच डुबोते
और उसी गिलास से पानी पीते।

एक इबारत थी
चम्मचों पर और गिलास पर
जिसका अनुवाद नहीं हो सकता था
संसार की किसी भी भाषा में।

हमने देखा एक दूसरे की आँखों में
वहाँ रहस्य उजागर हो रहा था
सूरज के जलते रहने का।

फिर हमने महसूस किया
कि जो कुछ है हमारे दरम्यान
उसे शब्दों के हवाले करना
ज़रूरी नहीं है। ●

## दुविधा

तुम्हारी दुविधा मेरी सुविधाओं को लेकर है
और मेरी दुविधा उन लोगों की सुविधाओं पर टिकी
जो हैं मेरे आस-पास।

मेरी दुविधा से तुम परेशान हो
और तुम्हारी दुविधा से मेरी नींद ग़ायब।

कल जब तुम पूछोगे
नींद नहीं आती तुम्हें?
तब मेरी थकी आँखों की नज़र
तुम्हारे दिल में
उतनी ही तेज़ी से उतरेगी
जितनी तेज़ी से
कोई अधर में उतरता है
पैराशूट लगाकर।

हम दोनों कितने निश्चिन्त हैं
कि बग़ैर कुछ कहे
हम दोनों एक दूसरे के
अपने बनते जा रहे हैं। ●

## नवारम्भ

शायद हो कुछ फिर से
नया
जो बीता है उससे अलग
माटी के कुछ और क़रीब
आकाश को एक और रंग देता
पतझर को पीछे छोड़ता
हवा में खुनक
धूप को एक नया तेवर देता
शायद हो कुछ फिर से नया।

रात नहीं है उतनी गहरी
नहीं हैं डरावने सपने पहले जैसे
दिन होने लगे हैं पहले से बड़े
हाथों में है नई ताक़त
शायद हो कुछ फिर से नया।

कितनी भरती है नई उमंग
जब फूटती हैं कोई एक कोंपल। ●

## कैम्पफ़ायर

गोलाकार नाचते हैं अक्षर
बीच में मैं
गोलाकार थिरकते हैं शब्द
बीच में मैं
गोलाकार गाते हैं वाक्य
बीच में मैं

गोलाकार! गोलाकार!
बीच में मैं
गोलाकार नाचती हूँ मैं
बीच में अक्षर
गोलाकार थिरकती हूँ मैं
बीच में शब्द
गोलाकार गाती हूँ मैं
बीच में वाक्य

गोलाकार! गोलाकार!
आग! अक्षर
आग! शब्द
आग! वांक्य
आग! आग
गोलाकार! गोलाकार! ●

## तुम बार-बार आते हो

तुम बार-बार आते हो मेरे पास
पर पाओगे क्या, नहीं जानती मैं

आशा और भविष्य का एक रिश्ता है
जो मोड़ देता है स्वप्न को सड़क की तरफ़
और तुम जानते हो सड़क कितनी ख़तरनाक होती है
स्वप्न बेखटके उस पर दौड़ नहीं लगा सकते! ●

## मौसम की पहचान

एक बार फिर तूफ़ान
आमंत्रण देता है
मुझमें से गुज़रने को

भूली नहीं हूँ
तूफ़ानों के गुज़रने के पश्चात्
बची बर्बादी की त्रासदी
फिर भी मैं प्रस्तुत हूँ
इन व्यतीत संघर्षों के चिन्तन के बाद
या तो भविष्य सार्थक हो उठेगा
या सिर्फ़ एक हादसा होगा।

जैसे पत्ते से रहित होता जाता है पेड़
समझ नहीं पाता कारण
कि पत्ते आएँगे या नहीं
वैसे मैं भी नहीं जानती
मौसम के आने से
कब, कौन, कहाँ, कैसे
सार्थक हो जाता है
अपनी पहचान के साथ।

जानती नहीं
मौसम यदि आएगा भी तो होगा कैसा! ●

## वक्त

वह समय याद है मुझे
सूचना दी थी
वक़्त ने कुंडी खटखटाकर आने की।

जाने से पहले
वह छोड़ गया था अपनी निशानी मेरे चेहरे पर
जड़वत हो गई थी मैं
काश! अपनी मुट्ठी में क़ैद कर सकती उसे। ●

## वह

वह जो मुझे
तुम तक ले जाता है मेरा यथार्थ है
और जो जन्म लेता है तुम्हारे अनिश्चय में
महज़ तुम्हारी कल्पना।

बाँध लो मुझे
अनागत की नींव यथार्थ पर होती है। ●

## जबकि जानती हूँ

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ
कि हम दोनों
एक राह के पथिक भी तो नहीं हो सकते
पाँवों की ज़मीन के एक होते हुए भी!

तुम्हारे रक्त का कम्पन
ज़मीन से होता हुआ
छू रहा है मेरे पाँवों को
मेरे हृदय का स्पन्दन
पहुँचता है तुम तक उसी तरह।

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ
कि हम दोनों की उड़ान
एक ही दिशा की नहीं हो सकती
हमारे ऊपर के आकाश के एक होते हुए भी!

तुम्हारी चाह का कम्पन
आकाश से होता हुआ
छू रहा है मेरी चाह को
मेरी चाह की उड़ान
पहुँचती है तुम तक उसी तरह।

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ
कि हम दोनों की साँस
एक नहीं हो सकती
हमारे चारों ओर डोलती हवा के एक होते हुए भी!

तुम्हारी साँस की आग
हवा में फैलती हुई
छू रही है मुझे
मेरी साँस का ताप
पहुँचता है तुम तक उसी तरह!

धरती, आकाश और हवा के एक होते हुए भी
अपनी-अपनी आग लिए
हम दोनों एक दूसरे के सम्मुख
एक दूसरे को पहचानते
अपनी सीमाओं में बद्ध
क्यों होना चाहते हैं असीम?

क्यों सोच रही हूँ मैं तुम्हारे बारे में
जबकि जानती हूँ
कि यह सब सोचना
अन्ततः सोचना ही रह जाएगा! ●

## नया साल

बहुत दिनों बाद
क़लम ने सिर उठाया
कहा—
किया ख़ारिज जो पड़ने लगा था बासी
अब मुझे
लिखनी है नई इबारत
इस उजले आसमान पर! ●

## मादकता

बिना गड़गड़ाहट के
बादल बरस रहे हैं

हवा के साथ
थिरक रहे हैं पत्ते
वे अपनी नुकीली ज़बानों से
बहुत दिनों की प्यास
बुझा रहे हैं

हवा और फुहार
मिट्टी की गन्ध में मिल
रच रहे हैं कोमलता

रात
कितनी मादक
हो चली है। ●

## गैप

खालीपन का भराव
फ़ासले का तय होना
शायद यही कुछ सोचा था
इसीलिए मचा रोना-धोना

गैप था
उसी को भरने के लिए
असंख्य शब्दों का अभ्यास किया
गैप था
कि गैप ही रहा
पर ज़िन्दगी
दिन-ब-दिन
सँवरती चली गई। ●

## चुपचाप

चुपचाप!
चुपचाप!!

झरने की तरह बहो
चुपचाप! चुपचाप!

धरती की तरह सहो
चुपचाप! चुपचाप!

आग की तरह दहो
चुपचाप! चुपचाप!

हवा के साथ
आकाश में फैलते चलो
चुपचाप!
चुपचाप!! ●

## ट्राम

कविता की पंक्तियाँ पढ़ते हुए
मैं खोज रही हूँ तुम्हें

ट्राम में हूँ मैं
अचानक तुम मेरे सामने

संयोग घट रहा है मेरे तुम्हारे बीच
और हम हैं
कि किसी दुर्योग को धकेलने के लिए
कर रहे हैं नज़रअन्दाज़ संयोग को ही

ट्राम मेरे भीतर दौड़ रही है
और तुम किसी स्टॉपेज की तरह निश्चल

अचानक तुम कहोगे
हमारा गन्तव्य एक-दूसरे के पास है
फिर तुम मेरा हाथ पकड़ लोगे
और मैं तुम्हें समेट लूँगी अपनी बाँहों में
इस दुनिया की परिधि से बाहर। ●

## प्यास

मेरी प्यास ने
तुम में भर दिया है सम्मोहन
मेरी आकुलता
तुम्हें केंन्द्रित भी करती है
विकेन्द्रित भी।

मेरी विकलता भरती है
तुममें थरथराती आग
मेरा विचलित क्षण
तुम्हारे रहस्यों को करता है
अनावृत।

प्यास बुझ जाए
तो फिर रहस्य भी कहाँ? ●

## परिभाषा

जो परिभाषित नहीं होता
वही होता है मेरा अनुभव

जो परिभाषित नहीं होता
वही होता है मेरा सच

जो परिभाषित नहीं होता
वही मुझे
मेरा होना बताता है

जो परिभाषित नहीं होता
वही होता है मेरा अविच्छिन्न प्यार

जो परिभाषित नहीं होता
वही तो मुझे
रेखांकित कर जाता है! ●

## कथा

जब तक मैं जुड़ी थी
अपने ही संसार से
मेरी कहानी
सिर्फ़ मुझ तक रही

और जब मैंने
दूसरों की दुनिया का
एक पात्र खुद को बनाया
वह कथा बन गई। ●

## वसन्त

वसन्त!
तुम्हारी अगवानी में
मेरे पाँव
अगर थिरक नहीं रहे
तो इसमें मेरा दोष नहीं।

बताऊँगी मैं तुम्हें
मेरे शहर के बच्चे
अब खेलना पसन्द नहीं करते
बन्दूक से वे दो टुकड़ियों में बँट जाते हैं
बन्दूकें तान लेते हैं
पर इसमें उनका कोई दोष नहीं
जो वे देखते और सुनते हैं
करते हैं वही
वे केवल युद्ध की भाषा समझने लगे हैं।

बताऊँगी मैं तुम्हें
कसाई की दुकानों के सामने
जानवरों के गोश्त ख़रीदने की
भीड़ से भी ज़्यादा
बढ़ गई है आदमी को गोश्त
कर देने की भूख।

बताऊँगी मैं तुम्हें
कॉरपोरेशन के पानी की तरह बह रहा है
मेरे शहर के लोगों का लहू
और अपनी ही ज़मीन पर
लोग हो रहे हैं
निरीह, उत्पीड़ित, बेघरबार।

तुम मुझे क्षमा कर देना
वसन्त!
यदि तुम मेरी मुँडेर पर उतरो
और मैं तुम्हारे स्वागत के लिए बाहर न निकल सकूँ! ●

## स्पर्द्धा

मेरी करुण कहानी सुन
वे उदास हुए
उनकी उदासी देख
मेरी हताशा बढ़ी
उनकी आँखों में तरलता देख
मेरी आँसू बह निकले
उन्होंने मुझे गले से लगाया
मैंने उनके कंधे पर
अपने सिर टिका दिया

सहानुभूति की दौड़ में
हम दोनों
एक-दूसरे को
नीचा दिखा रहे थे। ●

## खूँटे

मुझे कितना बाँध रखा है
अनकहे खूँटों ने

माता-पिता
भाई-बहन
दोस्त-दुश्मन

न तो मैं दुधारू गाय हूँ
न रेस का घोड़ा
दिन-ब-दिन
मैं
तिरपाल बनती जा रही हूँ। ●

## भूमिका

ठंडे पड़ तो रहे है अंगारे
पर बुझे नहीं
ताकती हैं मायूस ऑखें।

अंगारों के बुझने से पहले
मैं ऑच दूँगी आग बनकर। ●

## ओ मेरी नियति

ओ मेरी नियति!
यह भी तो मुझे पता नहीं
कौन से उपाय रचे हैं तुमने शापमोचन के लिए?

मुझमें बसे स्वप्न, इच्छाएँ, उत्साह का वेग
परिणत हो रहे हैं रेत में
एक अभिशापित परिभाषा बनता जा रहा है मेरा इतिहास
मेरा नियन्ता!
क्या वह परिभाषा कभी बदली न जाएगी? ●

## दर्प

अभाव
जितना आहत करते है
दर्प
उतना बड़ा चँदोवा तानता है। ●

## वक़्त कम है

वक़्त कम है
और ढेर सारा पड़ा है काम
गाड़ी कब आ जाए
और छूट जाए
प्लेटफ़ॉर्म पर सामान
तब कितना ऊटपटाँग लगेगा! ●

## द्वन्द्व

दो पक्षियों ने
तीसरे पक्षी के लिए
शुरू किया चोंच-युद्ध।

चोंचों से बात
पंख उखाड़ने तक पहुँची
लहूलुहान होते
पक्षियों ने देखा
जिसके लिए वे लड़ रहे थे
वह डैने फैलाए
आकाश में उड़ रहा था। ●

## अभाव

अभाव हमें
कितना मरियल बना देते हैं
जब हम
अपने हमजोलियों की
खुशहाली की ख़बरें खुनते हैं! ●

## सुख-दुःख

मन लायक़ हो गया तो सुख
नहीं हुआ तो दुःख
इस मन ने ही तो
मुझे सुख-दुःख के झूले पर झुलाया
और मैं
कभी बच्ची की तरह
कभी मदारी की तरह
खुद को बहलाती चली गई। ●

## ज़िन्दगी

एक पूरी कविता की तरह है
हमारी ज़िन्दगी

जाने-अनजाने
हम उसको
हिस्सों में काटते चलते हैं
कभी-कभी
कुछ हिस्से
रचना बनते-बनते
आपको
रच जाते हैं।

और कुछ
अनजाने में
हमें छोटा कर जाते हैं। ●

## वे

वे
जो पा लेना चाहते हैं सौभाग्य
धारा के विपरीत जाकर
बन जाते हैं स्वयं त्रासदी।

वे
जो बहते हैं धारा के साथ
पा लेते हैं कुछ सुख
लेकिन होते हैं वे कहीं नहीं

इतिहास भेड़ों का नहीं होता
लिखती है त्रासदी ही केवल अमृताक्षरों की कथा। ●

## पथराई आँखों का सच

बचपन में
मेरी शिराओं में
संस्कारों को घोलते हुए
सिखाया गया था
संवेदनशील बनो संकोची रहो
अक्षत कौमार्य जीवन की पूँजी है
उसका दूषित होना मूल्यहीन हो जाता है।

इंद्र की स्वेच्छाचारिता और
धोखाधड़ी की सजा जब सबसे पहले
अहल्या ने भोगी थी

तब से
मैं अहल्या के रूप में
हज़ारों-हज़ारों बार अपराध के शिकार
को भुगत चुकी हूँ।

कभी राह चलते हुए
कभी खुले मैदान में
कभी गली में
कभी घर के भीतर घुसकर
बलात्कार का राहु
कच्ची और पकी उम्र के प्रति बेपरवाह
होकर
मेरे जीवन को ग्रहण लगा देता है।

शापमुक्त हो जाती है अहल्या
राम के चरण-स्पर्श से
किन्तु
छोड़ दी जाती हूँ मैं अकेली
घृणा और तिरस्कार से उठी अँगुलियों
के तेज़ प्रहार को झेलने के लिए

कैसा जघन्य, कैसा अक्षम्य अपराध
करते हैं
स्वेच्छाचारी कलियुगी इन्द्र
कभी कुत्ता बाँधनेवाली ज़ंजीर को
मेरी गर्दन में लपेटकर
एक लोथ की तरह
कोमा में भेज देते हैं मुझको
शरीर के पिंजरे में बंद
एक आहत आत्मा
रह जाती हूँ मैं।

सचमुच
मालिक बनने का दावा करने वाले
भक्षक बन जाएँ
प्यासी पथराई आँखों का सच
क्या अहल्या का उद्धार
देख पाएगा? ●

## अंजनासुंदरी

वक़्त के
बदलते
सात रंगों की छुअन से
जागृत हुआ
स्त्री के भीतर पैठा शक्ति केन्द्र
उसने खुद को आज़ाद करते हुए कहा
इक्कीसवीं शताब्दी में
औरत
न जिस्म होगी
न पदार्थ
न अंगूर का रस
पर सच कहो
अंजनासुंदरी!
क्या तुम्हारा पवञ्जय आज भी बदला है!

वही पवञ्जय
विवाह मण्डप से
बैंड बाजे बरातियों के साथ
तुम्हें ले गए थे
पर स्वीकार नहीं कर पाए थे
तुम्हें कभी पत्नी

और जब कभी
उनके भीतर की
दमित बीमार आकांक्षा
जागी
तुम्हारा दोहन कर
हो गए अदृश्य
और तुम
ठूँठ से खड़े
रेडरोड के वृक्ष की तरह
ठगी रह गई थी
कल भी
आज भी

आनेवाले कल में भी क्या
अंजनासुंदरी
समयचक्र बदलेगा? ●

## गांधारी

नहीं गांधारी
अब
शपथ मत खाओ
पातिव्रत्य धर्म की
आंखों पर पट्टी बाँधकर।

तुम्हारे पद-चिन्हों पर चलकर
कोल्हू का बैल बन जाती हैं स्त्रियाँ
और पूरी की पूरी ज़िन्दगी
कलछी और बेलन के बीच
त्रिशंकु सी लटकी रहती हैं।

धृतराष्ट्र और कौरव-पुत्र
स्वच्छन्द निजी अभीप्साओं
निजी स्वप्नों को
खुले आकाश के नीचे
निश्चिन्त होकर जीते हैं
और तुम

अपेक्षा को दुख का कारण
मानकर
चक्करघन्नी सी बन जाती हो।

गांधारी
कलियुग में दिव्य दृष्टि
पातिव्रत्य में बल
जैसे शब्दों के अर्थ चुक गए हैं
समक्ष में नहीं आता
कैसे तुम इतनी कमज़ोर हो गई हो
या
सहने की तुम्हें आदत-सी पड़ गई है
क्यों कभी तुम मुख नहीं खोलती
अपनी अस्मिता को दूसरों को
गढ़ने के लिए
क्यों बार-बार खुद को भूल जाती हो।

गांधारी
अपनी आँखों से
उतार फेंको पट्टी को
क्योंकि आज के धृतराष्ट्र
जन्मांध नहीं
वरन् अंधा होने का ढोंग रच रहे हैं
ताकि स्त्री
उनकी संपत्ति बनकर रह सके
जैसा वे उससे करवाना चाहें
वैसा वह कर सके।

उठो गांधारी
उठो
इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ पर
अपनी आँखों की पट्टी को
उतारो
ताकि अपनी आँखों से
दुनिया को देख सको
समझ सको। ●

## यह कैसी विडम्बना है मेरे प्रभु

यह कैसी विडम्बना है मेरे प्रभु
वह सिर्फ़ सिन्दूर और टिकुली की भाषा जानती है
दूसरी भाषा सीखने से इन्कार करती है।

जन्म से ही
वह दूसरों की ज़बान से बोलती है।
लकवाग्रस्त तो नहीं है उसका शरीर
शक्ति तो उसे भी मिली है
फिर क्यों

धूप की गर्माहट
सीढ़ियाँ चढ़ना
जुए में बाजी जीतना
इन सबके लिए
वह हाथ पैर नहीं चलाती?

जब मैं पूछती हूँ उससे
तो कहती है वह
क्या ज़रूरत है
ऐसे ही ठीक है।

हाँ प्रभु
जन्मघूँटी के उसके संस्कार बोलते हैं
लेकिन
जिस दिन वह बोलना सीखेगी
भाषा को एक नई गरिमा देगी। ●

## कन्यादान

नहीं,
माँ नहीं,
मुझे नहीं स्वीकार वह रास्ता
जिस रास्ते से गुज़रकर
तुम तै कर रही हो अपनी यात्रा।

क्या तुमने नहीं करवाया
स्त्री जीवन की अनुर्वर छवि से
मेरा परिचय
क्या नहीं कहा था तुमने
कि मेरे लिए नहीं है पीढ़ियों की लादी।

अब क्या हो गया है तुम्हें
कि आज पिला रही हो मुझे
स्त्री परमो धर्म का प्रवचन!

याद करो
माँ
कहा था तुमने
साकार करो मेरे अपूर्ण स्वप्नों को
मानवी बनो
स्त्री नहीं
अनुप्रेरित होकर
तुम्हारे अमृत बोल से
जीवन सिद्धि का
मैंने अखंड जाप शुरू कर दिया है
तुम्हारा दूध
मेरे ह्रदय के रक्त में घुल
बन गया है मेरी शक्ति
मुझे खोज है जीवन की उज्ज्वलता की

ज़िन्दगी का ग्राहक
स्त्री को चंद सिक्कों में
खरीद ले और वस्तु समझ बैठे
ऐसे संस्कारों द्वारा रची नियति
मेरी नियति नहीं हो सकती
अपनी ज़िन्दगी की हक़दार मैं खुद हूँ।

गलीज़ परम्परा का लिबास
उन्हें शोभा देता है
जो अपंग हैं और हैं मस्तिष्क रहित।
दान के तराजू पर वही तुलते हैं
जिन्हें कोई लगाव नहीं होता अपनी अस्मिता से
इतिहास और संस्कृति को वे ही दोहराते हैं
जिन्होंने समझ लिया है आँख मूँदकर
अनुकरण को जीवन।
पर मैं न तो इतिहास हूँ
न संस्कृति
मुझे मनुष्य की तरह जीना है।

औरत मांस का लोथड़ा नहीं
इसके देह मन्दिर के भीतर निवास करती है एक आत्मा
माँ,

बस यही भूल है मेरी
कि अपनी आत्मा को मैं प्यार करती हूँ।

माँ!
तुम्हारी विवशता, तुम्हारा धर्म
एक माँ का कर्त्तव्य है
किन्तु
मेरा धर्म मुझसे जुड़कर संचालित करता है
मेरे दो हाथ, दो पाँव
एक मस्तिष्क
और हथियार बन जाते हैं शब्द
मेरी चेतना के

माँ जानती हूँ मैं
मूल्य चुकाना पड़ता है कुछ पाने के लिए
तभी तो बुलन्द हुई है मेरी आवाज़
दान की परम्परा के खिलाफ़।

माँ आशीर्वाद दो
मेरे बुलंद हौसलों को
ताकि एक दिन स्त्री
मानवी बन सके
समाज की बेहतरी के लिए
नया कुछ रच सके! ●

# पिता

## कुछ कविताएँ

## जानने का सुख

दबे पाँव आई थी मृत्यु
एक बिल्ली की तरह
चाट गई थी मेरे पिता की साँसों को
एक क्षण पहले तक
जो जीवित थे
दूसरे ही क्षण शव बन पड़े थे।

नहीं जगा पाया था उन्हें मेरी माँ का विलाप
हम बच्चों का आर्त्तनाद
वे हमारी आवाज़ों की दुनिया से
बाहर थे।

जाना था मैंने पहली बार
एक साँस का अर्थ
आख़िर होता है क्या
जाना था पहली बार
धड़कनों का संगीत
जाना था जीवन का महत्व
महत्व इस पूरे शरीर का।

लेकिन
यह पहली बार जानना
कितना दे गया दुःख!

इस जानने का सुख
मेरे इस महादुख पर टिका है। ●

## पति के होने का अर्थ

एक लम्बा जीवन जिया था
मेरी माँ ने मेरे पिता के साथ
पिता के साथ उसने शुरू की थी अपनी गृहस्थी
उसकी गृहस्थी में हम पाँच भाई-बहनों के अलावा थे
और भी कई परिजन
एक बड़े कुटुम्ब की बड़ी थी मेरी माँ
हर मांगलिक कार्य में चलता था उसका निर्देश।

और
अभी-अभी
श्मशान घाट से लौटी है मेरी माँ
अपनी साड़ी ब्लाउज़ को
घाट पर छोड़कर
नए श्वेत वस्त्र धारणकर
दूसरों के निर्देशों का पालन करती
सत्तर पार की विधवा माँ
जिसे रखा जाएगा अलहदा
अब हर मांगलिक कार्य से।

पति के न होने का अर्थ
उसे तब तक ढोना पड़ेगा
अपने व्यक्तिगत दुख के साथ
जब तक वह अंतिम साँस नहीं लेती! ●

## उस कोने में

वह कोना अब भी है इस घर में
उस कोने में बिस्तर भी
बिस्तर पर तकिया भी
लेकिन उस तकिए की उठंग पर
बैठा करते थे जो
वे नहीं हैं अब
और उनके न रहने से
घर की छत मानो एकाएक
आँधी से उड़ गई है।

हम जो उम्र पाकर बड़े हुए हैं
सहसा फिर से बच्चे बन गए हैं
एक झटके से।

एक आश्वस्ति थी हमारे चारों ओर
उनके रहने से
जिसके कवच में हम सूरमाओं की तरह
अपने-अपने क्षेत्र का युद्ध लड़ा किरते थे
डींगें हाँकते थे
अपने कारनामों को बखान कर
उन्हें जताया करते थे हम भी कुछ हैं।

हमारी खुशी देखकर
तब उनकी आँखें भर आती थीं
लेकिन अब तो हम सब
आँसुओं भरी आँखों से देखा करते हैं
उस कोने में
जहाँ कुछ दिन पहले
हमको छाया देने वाला वृक्ष था।

एक वृक्ष एक छत थे हमारे पिता
जिनके होने से हमारा उत्साह था, हँसी थी
किलक थी
लेकिन उनके न रहने से उस कोने में
चिलक है
जो आँखों को चुभती है
तो चुभती चली जाती है।

बड़े भैया एक रात में बूढ़े हो गए हैं
छोटा भाई कुदकना भूल गया है
माँ है
जिसकी आँखों में हरदम बरसात रहती है
मैं हूँ
जिसने पहली बार जाना है
कि मौत कितना कुछ बिखेर देती है!

हम बच्चों का दुख हालाँकि सच्चा है
पर माँ के दुख के आगे कितना बच्चा है! ●

## ताकि मैं जान सकूँ

अपने आँसुओं को
मेरी हथेली पर रख दो मेरी माँ
ताकि मैं जान सकूँ
जीवन की कोमलता और
कठोरता एक साथ!

मुझे अपनी आँखों में झाँकने दो मेरी माँ
ताकि मैं जान सकूँ
जीवन की संसक्ति और
विरक्ति एक साथ!

अपने हाथों को मेरे सिर पर रखो मेरी माँ
ताकि मैं जान सकूँ ज़िन्दगी की चाहत और
नफ़रत एक साथ। ●

## नाटक चल रहा है एक

भैया वे सभी कुछ कर रहे हैं
जो उनसे बड़े-बूढ़े कह रहे हैं।

काठ की तरह बैठे हैं एक ही आसन पर
अपने भीतर का हाहाकार छिपाए
वे वीर बनने का स्वाँग कर रहे हैं
आँसुओं को रोककर
फीकी हँसी हँस देते हैं।

लोगों की संवेदना और सहानुभूति
नम्रतापूर्वक अपने माथे पर बिठाते हैं
उनके घुटे सिर पर
इस ठंड में भी वह पसीने की
तरह चमकती है।

एक नाटक चल रहा है
देने और लेने का
यह जानते हुए भी भैया बर्दाश्त कर रहे हैं। ●

## सूनी है

सूनी है
मेरी माँ की बूढ़ी कलाइयाँ
काँच की चूड़ियाँ तोड़कर
रख दी गईं मेरे पिता के शव पर
और जो थी सोने की चूड़ियाँ
वे उतार कर दान कर दी गईं।

एक स्त्री
जिसका सूना हो गया है संसार
उसे जीते ही
सशरीर सूना कर दिया गया है। ●

## श्राद्ध

सभी परिजन जुटे हैं
हर एक कुछ न कुछ करने को बेचैन
आने वालों की उदासी और हँसी
पंगत में जीमते लोग
बड़े जतन से जिमाते हैं हम सब भाई-बहन
सभी तृप्त होकर खाएँ और जाएँ
शायद इसी से हमारे पिता की आत्मा
सुख पाए!

ब्राह्मणों को दक्षिणा
भानजे का शैयादान
बेटियों को आभूषण-रुपए
बहू को सास की नथ
यह सब इसलिए
कि जो जीवित बचे हैं इस बड़े परिवार में
वे सभी
मृतात्मा के नाम पर
एक बार फिर करें पुण्यलाभ
मृत्यु के बाद का यह उत्सव
शायद
मेरी माँ का दुःख कुछ कम करे! ●

## दुःख तो एक महासागर है

मेरे रोदन में थी प्रार्थना
कामना में थी कातरता
कि प्रभु हमें हमारे दुःख से मुक्ति मिले!

लेकिन थमते हुए आँसुओं में
मैंने पाया—
दुःख का विलोम सुख नहीं है
और मुक्ति भी नहीं है इस दुःख से!

दुःख तो एक महासागर है
जिसमें हमें निरन्तर डूबना है
उतराना है
और फिर अन्ततः इसी में डूब जाना है!

सचमुच कितना अबूझ है जीवन
जहाँ केवल अविराम संघर्ष है
चाहे वह अपने दुःख से मुक्ति पाने के लिए हो
या दूसरों को मुक्ति दिलाने के लिए
वही, केवल वही जीवन का उत्कर्ष है। ●

**प्रकाशित कृतियाँ :**

**कविता :**

विश्वास रच रहा है मुझे

**आलोचना :**

छविनाथ मिश्र : सृजन एवं संघर्ष

**सम्पादन :**

नारीमंच अपूर्वा (त्रैमासिक)

स्वर सामरथ (त्रैमासिक)

साहित्य बुलेटिन (मासिक)

**सम्पादित ग्रन्थ :**

एक गौरव यात्रा (आचार्य कल्याणमल लोढ़ा अभिनन्दन ग्रन्थ)

आरंभिक रचनाएँ **नवाकुंर** में प्रकाशित

**सम्पर्क :**

31, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट

कोलकाता - 700 007

प्रतिध्वनि
2002
31, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007